नई वाचा-
एक नया व उत्तम मार्ग

''पर उसको उसकी सेवकाई से बढ़कर मिली, क्योंकि वह और भी उत्तम वाचा का मध्यस्थ ठहरा, जो और उत्तम प्रतिज्ञाओं के सहारे बान्धी गई है। क्योंकि यदि वह पहिली वाचा निर्दोष होती, तो दूसरी के लिए अवसर न ढूंढ़ा जाता'' (इब्रानियों 8:6, 7)।

यदि नई वाचा केवल पुरानी वाचा का ही नया रूप है, तो फिर यह दी ही क्यों गई? यदि यह पहली वाचा के जैसी होती, तो इसकी आवश्यकता न होती। पुरानी वाचा ने अपना उद्देश्य पूरा कर लिया था, सो परमेश्वर ने एक नई और अलग वाचा दी।

अपने नियमों तथा विधियों के साथ, पुरानी और नई वाचा में कुछ समानताएं हैं; परन्तु इसकी भिन्नताएं भी ज्यादा हैं जिसमें इसका उद्देश्य, ढंग और सबसे अधिक स्पष्ट पापों की क्षमा के लिए इसकी शर्तें हैं। इनके अलावा, और भी बहुत सी भिन्नताएं इन वाचाओं में हैं। कइयों की तुलना रूपों और प्रतिरूपों में की जाती है। (पृष्ठ 138 और 144 पर चार्ट देखिए।)

''व्यवस्था'' और ''वाचा'' शब्द

नये नियम में, ''व्यवस्था'' शब्द का इस्तेमाल इस्राएल जाति को मूसा के द्वारा परमेश्वर की एक या सभी आज्ञाओं के लिए हुआ है। इनमें वाचा को बनाने के लिए न केवल दस आज्ञाएं ही आती हैं बल्कि वे सभी निर्देश भी आते हैं जिन्हें ''विधियां,'' ''धर्ममय नियम,'' ''आज्ञाएं,'' ''उपदेश,'' और ''चितौनियां'' कहा जाता है।

पहाड़ी उपदेश में यीशु ने व्यवस्था की बात की (मत्ती 5:17)। फिर उसने दस आज्ञाओं में से दो, ''हत्या न करना'' और ''व्यभिचार न करना'' को उद्धृत किया (मत्ती 5:21, 27)। उसने तलाक के ''त्यागपत्र,'' ''झूठी शपथ,'' ''शपथ'' को पूरा करने, ''आंख के बदले आंख, और दांत के बदले दांत'' और ''अपने पड़ोसी से प्रेम रखना'' का भी उल्लेख किया (मत्ती 5:31, 33, 38, 43)। परन्तु, व्यवस्था की सबसे बड़ी और पहली आज्ञा ''तू परमेश्वर अपने प्रभु से... प्रेम रख'' (मत्ती 22:37, 38) दस आज्ञाओं में नहीं मिलती। यीशु ने कहा कि व्यवस्था याजकों को सब्त अर्थात विश्राम दिन तोड़ने की अनुमति

देती थी (मत्ती 12:5), स्पष्टत: वे सब्त के दिन पशुओं के बलिदान भेंट करके सब्त को तोड़ते थे (गिनती 28:9, 10)। व्यवस्था से उद्धृत करते हुए (''लालच मत कर''; रोमियों 7:7), पौलुस स्पष्टत: दस आज्ञाओं की बात ही कर रहा था। उसने लिखा है कि प्रेम ''व्यवस्था'' को पूरा करता है, फिर उसने दस आज्ञाओं में से चौथी आज्ञा को उद्धृत करते हुए दिखाया कि ''व्यवस्था'' से उसका क्या अभिप्राय था (रोमियों 13:8, 9)। याकूब ने भी दिखाया कि ''व्यवस्था'' शब्द का इस्तेमाल करते हुए उसने दस आज्ञाओं को शामिल किया (याकूब 2:10, 11)। यीशु व आत्मा की प्रेरणा प्राप्त इन लेखकों ने कोई अन्तर नहीं किया, बल्कि पुराने नियम की इन आज्ञाओं में से हर एक को व्यवस्था का एक भाग माना।

दोनों नियमों में से किसी में भी ''मूसा की व्यवस्था'' और ''यहोवा की व्यवस्था'' में कोई अन्तर नहीं किया गया है। इन शब्दों को एक दूसरे के स्थान पर इस्तेमाल किया गया है (लूका 2:22-24)। व्यवस्था को परमेश्वर की व्यवस्था माना जाता है क्योंकि इसका आरम्भ मूसा से नहीं बल्कि परमेश्वर से हुआ है। जो कुछ ''मूसा की व्यवस्था'' में लिखा गया था वह, ''यहोवा की आज्ञा'' से ही लिखा गया था (2 राजा 14:6)। इसीलिए तो सुलैमान कह पाया था, ''और जो कुछ तेरे परमेश्वर यहोवा ने तुझे सौंपा है, उसकी रक्षा करके उसके मार्गों पर चला करना और जैसा मूसा की व्यवस्था में लिखा है, वैसा ही उसकी विधियों तथा आज्ञाओं, और नियमों, और चितौनियों का पालन करते रहना; जिससे जो कुछ तू करे और जहां कहीं तू जाए उसमें तू सफल होए'' (1 राजा 2:3; देखिए 2 इतिहास 33:8)। ये नियम ''मूसा के द्वारा दी गई यहोवा की व्यवस्था की पुस्तक'' में पाए जाते थे (2 इतिहास 34:14)। ''व्यवस्था की उस पुस्तक'' (2 राजा 22:11) को ''वाचा की पुस्तक'' भी कहा जाता था (2 राजा 23:2)।

''एज्रा मूसा की व्यवस्था के विषय में जो इस्राएल के परमेश्वर यहोवा ने दी थी, निपुण शास्त्री था'' (एज्रा 7:6)। राजा ने उससे ''मूसा की जो व्यवस्था यहोवा ने इस्राएल को दी थी, उसकी पुस्तक ले'' आने को कहा। बाद में, लिखा गया: ''और उन्होंने परमेश्वर की व्यवस्था की पुस्तक से पढ़कर अर्थ समझा दिया'' (नहेमायाह 8:1, 8; 14, 18 आयतें भी देखिए; 10:29, 34)। स्पष्टत:, जैसा कि इन आयतों में देखा गया है मूसा की व्यवस्था और परमेश्वर की व्यवस्था दोनों एक ही हैं।

नये नियम में जहां ''पहली'' या ''पुरानी'' वाचा की बात होती है, तो उसमें दस आज्ञाएं शामिल होती हैं। ''मूसा की व्यवस्था की पुस्तक,'' ''परमेश्वर की व्यवस्था की पुस्तक'' और ''वाचा की पुस्तक'' तीन अलग-अलग पुस्तकें नहीं हैं। इसी प्रकार, ''मूसा की व्यवस्था'' और ''परमेश्वर की व्यवस्था'' दो अलग-अलग नहीं बल्कि एक ही व्यवस्था है। व्यवस्था में दस आज्ञाओं और मूसा के द्वारा दी गई परमेश्वर की शेष व्यवस्था सहित वे आज्ञाएं भी व्यवस्था में शामिल थीं जो परमेश्वर ने मूसा को दी थीं। यह बात सत्य है, इसलिए पुरानी और नई वाचा में तुलना की जा सकती है, चाहे ''वाचा'' का शब्द हर जगह इस्तेमाल न किया जाए।

वाचाओं की तुलना करने पर, प्रत्येक वाचा की प्रकृति स्पष्ट हो जाती है। पहली वाचा जो परमेश्वर और इस्राएल जाति के बीच बांधी गई थी, मूसा की मध्यस्थता में हुआ एक

समझौता थी। इसके अधीन, उन्हें आशिषें मिलनी थीं जिन पर खतने और वाचा की आज्ञा मानने की मुहर लगी हुई थी। यीशु की मध्यस्थता वाली दूसरी वाचा, सारी सृष्टि के लोगों के लिए है। इस वाचा से लाभ लेने के लिए, हमारे लिए नया जन्म लेना, पवित्र आत्मा से मुहर होना और नया जीवन जीना आवश्यक है।

दो वाचाओं पर विचार करते हुए, इब्रानियों की पत्री के लेखक ने उस वाचा के बारे में लिखा जिसका मध्यस्थ यीशु है: ''पर उसको उनकी सेवकाई से बढ़कर मिली, क्योंकि वह और भी उत्तम वाचा का मध्यस्थ ठहरा, जो और उत्तम प्रतिज्ञाओं के सहारे बांधी गई है'' (इब्रानियों 8:6)।

दो वाचाओं में तुलना

नई वाचा	पुरानी वाचा
1. नई वाचा भी *परमेश्वर* ने *बांधी* (यिर्मयाह 31:31क)।	1. परमेश्वर ने पहली वाचा *बांधी* (व्यवस्थाविवरण 5:2)।
2. यह वाचा *क्रूस पर यीशु की मृत्यु के समय* लागू हुई। ''क्योंकि जहां वाचा बान्धी गई है वहां वाचा बान्धने वाले की मृत्यु का समझ लेना भी अवश्य है। क्योंकि ऐसी वाचा मरने पर ही पक्की होती है'' (इब्रानियों 9:16, 17क)।	2. यह *इस्राएल के मिसर से निकलने* के समय लागू हुई ''जब यहोवा ने इस्राएलियों के मिस्र से निकलने पर उनके साथ वाचा बान्धी'' (1 राजा 8:9ख)।
3. इसका *मध्यस्थ यीशु* है (इब्रानियों 12:22-24क)।	3. मूसा इसका *मध्यस्थ* था (व्यवस्थाविवरण 5:5क)।
4. यह दूसरी वाचा *यीशु के लहू से अर्पित की गई।* ''फिर उस ने कटोरा लेकर, धन्यवाद किया, और उन्हें देकर कहा, तुम सब इस में से पीओ। क्योंकि यह वाचा का मेरा ... लोहू है'' (मत्ती 26:27, 28क)।	4. पहली वाचा *पशुओं के लहू से बांधी गई* थी। ''तब मूसा ने लोहू को लेकर लोगों पर छिड़क दिया, और उन से कहा, देखो, यह उस वाचा का लोहू है जिसे यहोवा ने इन सब वचनों पर तुम्हारे साथ बांधा है'' (निर्गमन 24:8)।
5. दूसरी वाचा *सारी सृष्टि के लोगों* के लिए है (मरकुस 16:15)।	5. पहली वाचा *इस्राएल* के साथ थी (1 राजा 8:9)।

6. सब लोगों के लिए *यीशु की आज्ञाएं* मानना आवश्यक है। यीशु ने अपने चेलों को आज्ञा दी कि सारी सृष्टि के लोगों को ''सब बातें जो मैं ने तुम्हें आज्ञा दी है, मानना सिखाओ'' और उन्हें चेला बनाओ (मत्ती 28:19, 20क)।

6. इस्राएल के लिए *व्यवस्था की आज्ञाओं* को मानना आवश्यक था। ''और उसने तुम को अपनी वाचा के दसों वचन बताकर उनको मानने की आज्ञा दी; ...'' (व्यवस्थाविवरण 4:13, 14)।

7. आज्ञा मानने की आशिषें इस जीवन में परमेश्वर की ओर से सम्भाल और आने वाले जीवन में, *स्वर्ग* में अनन्त जीवन हैं। ''... परमेश्वर ...ने ... हमें जीवित आशा के लिए नया जन्म दिया। अर्थात एक अविनाशी और निर्मल, और अजर मीरास के लिए'' (1 पतरस 1:3, 4)।

7. आज्ञा मानने की आशिषें *इस्राएल के देश में* दीर्घायु के साथ-साथ खुशहाली थी। ''जिस मार्ग पर चलने की आज्ञा तुम्हारे परमेश्वर यहोवा ने तुम को दी है उस सारे मार्ग पर चलते रहो, कि तुम जीवित रहो, और तुम्हारा भला हो, और जिस देश के तुम अधिकारी हो उस में तुम बहुत दिनों के लिए बने रहो'' (व्यवस्थाविवरण 5:33)।

8. आज्ञा न मानने का दण्ड *नरक* में हमेशा का कष्ट है। ''और उनकी पीड़ा का धुआं युगानुयुग उठता रहेगा, ... उन को रात दिन चैन न मिलेगा'' (प्रकाशितवाक्य 14:11); ''और ये अनन्त दण्ड भोगेंगे'' (मत्ती 25:46क)।

8. आज्ञा न मानने का दण्ड अस्थाई कष्ट और अन्त में उस देश से निकालकर दासता में भेजना था। यदि वे उसकी आज्ञा न मानकर उसकी वाचा को तोड़ते, तो परमेश्वर ने कहा था कि उन्हें भयंकर दण्ड मिलेगा (लैव्यव्यवस्था 26:14-33)। यदि वे न बदलते, तो उसने कहा था कि इस्राएल को जातियों में बिखरा देगा (लैव्यव्यवस्था 26:33)।

9. इसे पाने वाले *परमेश्वर के पुत्र* हैं। ''हम परमेश्वर की सन्तान हैं और यदि सन्तान हैं, तो वारिस भी, बरन परमेश्वर के वारिस और मसीह के संगी वारिस हैं, जबकि हम उसके साथ दुख उठाएं कि उसके साथ महिमा भी पाएं'' (रोमियों 8:16ख, 17)।

9. *इस्राएल* की संतान के साथ बांधी गई थी (1 राजा 8:9)। वे याकूब के वंशज थे जिसका नाम बदलकर इस्राएल रखा गया था (उत्पत्ति 32:28क)।

10. ये लोग *आत्मिक जन्म* लेकर संतान

10. वे *शारीरिक जन्म* के द्वारा संतान बने।

बने हैं। ''अर्थात शरीर की सन्तान परमेश्वर की सन्तान नहीं, परन्तु प्रतिज्ञा के सन्तान वंश गिने जाते हैं'' (रोमियों 9:8)। वंश वे हैं जो ''न तो लोहू से, न शरीर की इच्छा से, न मनुष्य की इच्छा से, परन्तु परमेश्वर से उत्पन्न हुए हैं'' (यूहन्ना 1:13; गलतियों 3:26, 27 भी देखिए)।

पौलुस ने कहा कि ''जो शरीर के भाव से मेरे कुटुम्बी हैं ... वे इस्राएली हैं'' (रोमियों 9:3ख, 4क)।

11. *पवित्र आत्मा* का दान इसकी मुहर है। ''और जो हमें ... दृढ़ करता है, ... जिसने हम पर छाप भी कर दी है और बयाने में आत्मा को हमारे मनों में दिया'' (2 कुरिन्थियों 1:21, 22); ''और उसी में तुम पर भी ... प्रतिज्ञा किए हुए पवित्र आत्मा की छाप लगी। वह उसके मोल लिए हुओं के छुटकारे के लिए हमारी मीरास का बयाना है'' (इफिसियों 1:13ख, 14क; देखिए गलतियों 4:6)।

11. पुत्र होने का चिह्न और मुहर *खतना* थी। ''तुम अपनी अपनी खलड़ी का खतना करा लेना; जो वाचा मेरे और तुम्हारे बीच में है, उसका यही चिह्न होगा'' (उत्पत्ति 17:11)।

12. दूसरी वाचा *धर्म तथा आत्मा की* सेवकाई थी। ''तो आत्मा की वाचा और भी तेजोमय क्यों न होगी ... तो धर्मी ठहरानेवाली वाचा और भी तेजोमय क्यों न होगी?'' (2 कुरिन्थियों 3:8, 9)।

12. पहली वाचा *मृत्यु तथा दण्ड* की सेवकाई थी। ''और यदि मृत्यु की वह वाचा जिस के अक्षर पत्थरों पर खोदे गए थे, यहां तक तेजोमय हुई ...'' (2 कुरिन्थियों 3:7); ''क्योंकि जब दोषी ठहराने वाली वाचा तेजोमय थी'' (2 कुरिन्थियों 3:9क)।

एक उत्तम वाचा

पहली वाचा में ऐसे कार्य थे जिनका न्याय (लैव्यव्यवस्था 19:15) और दण्ड समाज द्वारा दिया जा सकता था (गिनती 15:30, 31)। इसकी आज्ञाएं लोगों की केवल एक जाति के लिए थीं, जो उन्हें परमेश्वर और लोगों के प्रति काम को समझने में सहायता के लिए दी गई थीं। दूसरी वाचा हृदय की उन बातों को देखती है जो परमेश्वर और दूसरे लोगों से हमारे सम्बन्धों को प्रभावित करती हैं। इस वाचा में, न्याय (मत्ती 7:1) और दण्ड परमेश्वर पर छोड़ दिए जाते हैं (रोमियों 12:19; 2 थिस्सलुनीकियों 1:7, 8), जो हमारे हृदय को जान सकता है (1 शमूएल 16:7)।

पहली वाचा निर्बल थी क्योंकि जो कुछ यह पापी मनुष्य के लिए करती थी उससे वह धर्मी नहीं ठहर सकता था। दूसरी वाचा यीशु की सामर्थ से सब कुछ कर सकती है। ''क्योंकि जो काम व्यवस्था शरीर के कारण दुर्बल होकर न कर सकी, उसको परमेश्वर ने किया, अर्थात अपने ही पुत्र को पापमय शरीर की समानता में, और पाप के बलिदान होने के लिए भेजकर, शरीर में पाप पर दण्ड की आज्ञा दी'' (रोमियों 8:3)।

एक उत्तम उद्देश्य

क्या परमेश्वर ने ऐसी व्यवस्था दी थी जो दोषयुक्त थी? (देखिए इब्रानियों 8:7)। परमेश्वर के परिप्रेक्ष्य से, जिस उद्देश्य के लिए इसे बनाया गया था उसके हिसाब से यह सम्पूर्ण थी। व्यवस्था के द्वारा, परमेश्वर ने एक मापदण्ड दे दिया जिससे मनुष्य को दिखाया गया कि पाप क्या है (देखिए रोमियों 7:7) और पापयुक्त होना क्या है (रोमियों 7:13)। ''इसलिए कि व्यवस्था के द्वारा पाप की पहचान होती है'' (रोमियों 3:20ख)। इस प्रकार, परमेश्वर ने समझाया कि पाप कैसे उसके स्वभाव के विपरीत है (रोमियों 3:23), और यह कितना पापमय है (रोमियों 7:13)। व्यवस्था पाप के निवारण के लिए दी गई थी। ''वह तो अपराधों के कारण बाद में दी गई'' (गलतियों 3:19)। इसके द्वारा, सब लोगों को परमेश्वर की योजना से उद्धारकर्त्ता के द्वारा ऐसे दण्ड से मनुष्य जाति को छुड़ाने तक, पाप के वश में कर दिया गया था (गलतियों 3:22)।

व्यवस्था हमें एक शिक्षक या रखवाले के रूप में उसकी सुरक्षा में रहने के लिए दी गई थी (गलतियों 3:23, 24), जब तक कि वह वंश अर्थात यीशु आ न जाए (गलतियों 3:19)। अब जबकि यीशु आ चुका है, व्यवस्था का उद्देश्य पूरा हो गया है। अब हम शिक्षक या रखवाले के अधीन नहीं हैं (गलतियों 3:25)।

एक अर्थ में, व्यवस्था दोष रहित नहीं थी (इब्रानियों 8:7), क्योंकि यह पापी मनुष्य को सिद्ध नहीं बना सकती थी (इब्रानियों 7:19क)। पाप के दण्ड के रूप में, व्यवस्था बिना किसी उल्लंघन के पूरी तरह से आज्ञा मानने की मांग करती थी (गलतियों 3:10; याकूब 2:10)। इस पापदण्ड से यह प्रकट हुआ कि हमसे गलतियां हो ही जाती हैं। इस कारण इसने एक शिक्षक की तरह (गलतियों 3:25) हमें यह दिखाते हुए कि हम पापी हैं जिन्हें उद्धार की आवश्यकता है, अपना उद्देश्य पूरा किया।

व्यवस्था का उद्देश्य इस प्रकार समझाया जा सकता है। फ्लोरिडा में रहने वाला एक आदमी गर्मियों में अपने एक मित्र के पास कनाडा गया। उसे वह इलाका इतना अच्छा लगा कि उसने अपने मित्र से कहा कि जैसे उसने फ्लोरिडा में अनानास के बाग लगाए हैं वैसे ही वह भी कनाडा में लगाना चाहता है। उसका मित्र उसे यह नहीं समझा पाया कि ऐसा काम यहां सफल नहीं हो सकता, सो उसने उसे कनाडा के सबसे गर्म इलाके में दूर दक्षिणी ढलान पर अपना बाग लगाने की सलाह दी। पहली सर्दियों में, कोहरा जल्दी पड़ गया; अनानास के पौधों पर फल आने से पहले ही बर्फ पड़ गई। आदमी कंधे उचकाकर कहने लगा कि इस वर्ष कोहरा जल्दी पड़ गया इसलिए अगले साल देरी से पड़ेगा। उसने अगले साल कोशिश की, फिर ऐसा ही हुआ। आखिर दस सालों तक कोशिश करने के बाद, उस आदमी ने माना कि कनाडा का मौसम अनानास की खेती के अनुकूल नहीं है।

परमेश्वर ने इब्राहीम को चुना जो विश्वासयोग्य धर्मी पुरुष था, तथा उसने उसे और उसकी संतान को उनके आस-पास के बुरे संसार से अलग कर दिया। उसने उनकी अगुआई के लिए उन्हें एक धर्मी व्यवस्था दी और उनके साथ रहने की प्रतिज्ञा की। यदि अपने भले कर्मों से परमेश्वर की धार्मिकता को पाया जा सकता है, तो इस्राएल के लोगों से बढ़कर कौन हो सकता है, क्योंकि परमेश्वर ने उन्हें पापी जातियों से दूर करके उनकी आवश्यकताओं को पूरा किया है। ऐसी आशीष पाने के बावजूद भी, उन सबने पाप किया।

इस्राएलियों को यह समझाने के लिए कि व्यवस्था के अधीन उद्धार नहीं कमाया जा सकता, काफी वर्ष देकर परमेश्वर ने दिखा दिया कि सब लोग पापी हैं। हम अपने भले कामों से अपने आपको बचा नहीं सकते अर्थात हमें एक उद्धारकर्त्ता की आवश्यकता है। इस प्रकार ''व्यवस्था मसीह तक पहुंचाने को हमारी शिक्षक हुई है कि हम विश्वास से धर्मी ठहरें'' (गलतियों 3:24)। हमें यह बहस नहीं करनी चाहिए कि बिना यीशु के उद्धार पाया जा सकता है, क्योंकि परमेश्वर ने इस्राएलियों के द्वारा निर्णायक रूप से दिखा दिया है कि अच्छे से अच्छे वातावरण में रहकर भी लोग पापी ही बने रहते हैं और धर्मी बनने के लिए उन्हें यीशु की सहायता की आवश्यकता है।

एक उत्तम ढंग

व्यवस्था तथा नई वाचा धार्मिकता के अपने ढंगों के कारण अलग-अलग हैं। अलग-अलग बातों पर ज़ोर देने में भी वे भिन्न हैं। पहली वाचा ऐसे नियमों पर ज़ोर देती थी जो मनुष्य के कार्य को संचालित करते हैं, जबकि दूसरी वाचा शरीर को नियन्त्रित करने वाले आत्मा के गुणों की बात करती है।

पहली वाचा नकारात्मक बातों पर अधिक ज़ोर देती थी जबकि सकारात्मकता के महत्व को कम करती थी; दूसरी वाचा सकारात्मकता पर ज़ोर देती है परन्तु हमें बुराई न करने के लिए कहती है। पहाड़ी उपदेश में, यीशु ने कहा कि कुछ बातें हैं जो नहीं की जानी चाहिए।[1] पौलुस ने भी उन बातों के लिए कहा जो मसीही लोगों को नहीं करनी चाहिए।[2] नये नियम में ''न करना'' के केवल कुछ ही वाक्य हैं। लोगों का जीवन कैसा होना चाहिए इस

सम्बन्ध में नये नियम में नकारात्मक के बजाय सकारात्मक आज्ञाएं अधिक हैं। पुराने नियम में, वाक्य सकारात्मक से अधिक नकारात्मक हैं।

उत्तम प्रतिज्ञाएं

दूसरी वाचा पहली से उत्तम है क्योंकि इसकी प्रतिज्ञाएं पहली वाचा में दी गई प्रतिज्ञाओं से उत्तम हैं (इब्रानियों 8:6)। परमेश्वर ने इस्राएलियों से यह प्रतिज्ञा नहीं की थी कि आज्ञा मानने वालों को स्वर्ग में (1 पतरस 1:3, 4) अनन्त उद्धार का प्रतिफल मिलेगा (इब्रानियों 5:8)। पुरानी वाचा में, बदली हुई अर्थात जी उठी देह का कोई उल्लेख नहीं किया गया जो परमेश्वर के स्वरूप पर होगी (फिलिप्पियों 3:21; 1 यूहन्ना 3:2)। उसने ऐसी प्रतिज्ञाएं उन लोगों से कीं जो दूसरी वाचा में विश्वासी बनकर रहते हैं। नई वाचा की ये प्रतिज्ञाएं लम्बी आयु और इस्राएल के देश में शारीरिक खुशहाली की पुरानी वाचा की प्रतिज्ञाओं से कहीं उत्तम हैं (व्यवस्थाविवरण 5:33)।

जो वाचा परमेश्वर ने इस्राएल के साथ बांधी थी उसमें अनन्त जीवन या स्वर्ग की प्रतिज्ञा नहीं की गई थी। क्योंकि इसमें ऐसी प्रतिज्ञाएं नहीं थीं, इसलिए स्वर्ग में अनन्त जीवन पाने की बात उस वाचा को पूरा करने से नहीं हो सकती थी। यदि पुरानी वाचा में इतनी प्रतिज्ञाएं की जाती, तो नई वाचा में उत्तम प्रतिज्ञाएं नहीं होतीं। दूसरी ओर यदि मरम्मत किए हुए खुशहाल देश में भी नई वाचा में की गई प्रतिज्ञा है, तो इसमें पहली वाचा से उत्तम प्रतिज्ञाएं नहीं हैं।

नई वाचा अलग है और पहली से उत्तम है। यह उत्तम प्रतिज्ञाओं पर बांधी गई है (इब्रानियों 8:6)। फिर, इसमें बांधने वाला (इब्रानियों 3:3), मध्यस्थ (इब्रानियों 12:24), आशा (इब्रानियों 7:19), याजकाई (इब्रानियों 7:21–24), बलिदान (इब्रानियों 9:23), सम्पत्ति (इब्रानियों 10:34; 11:16) और मीरास (1 पतरस 1:3, 4) उत्तम ही दिए गए हैं।

सारांश

परमेश्वर ने अलग–अलग वाचाओं के साथ अलग–अलग लोगों से व्यवहार किया है। मूसा के द्वारा जो वाचा उसने इस्राएल को दी थी वह यीशु के द्वारा दी गई वाचा से निकम्मी है। मसीही युग में, हमें एक उत्तम वाचा दी गई है जो उत्तम प्रतिज्ञाओं पर बांधी गई है।

पाद टिप्पणियां

[1]देखिए मत्ती 5:34; 6:1–3, 7, 8, 16; 7:1, 6; 23:3, 8, 9. [2]देखिए रोमियों 12:2, 3, 11, 14, 16, 19; 13:13; 15:1; इफिसियों 5:7, 18; 6:4, 6; कुलुस्सियों 3:2, 9, 19, 21, 22.

पुरानी वाचा बनाम नई वाचा

दूसरी वाचा	पहली वाचा
1. आशिषें (गलतियों 3:13, 14)	1. श्राप (गलतियों 3:10)
2. दया (इब्रानियों 8:12)	2. बिना दया के (इब्रानियों 10:28)
3. धार्मिकता (2 कुरिन्थियों 5:21); दण्ड नहीं (रोमियों 8:1)	3. दोषी ठहराने वाली (2 कुरिन्थियों 3:9; गलतियों 2:21)
4. जीवन (रोमियों 8:2क)	4. मृत्यु (2 कुरिन्थियों 3:7; रोमियों 8:2ख)
5. प्रभावकारी बलिदान (मत्ती 26:28)	5. अप्रभावकारी बलिदान (इब्रानियों 10:4, 11)
6. शरीर की अभिलाषाओं पर काबू पाने के लिए हमारी सहायता (गलतियों 5:16)	6. पापों की अभिलाषाएं जगाने वाली (रोमियों 7:5, 8)
7. आत्मा के द्वारा सामर्थ (इफिसियों 3:16)	7. शरीर के कारण निर्बल (रोमियों 8:3); निष्फल (इब्रानियों 7:18)
8. मेल (कुलुस्सियों 1:21)	8. क्रोध (रोमियों 4:15)
9. आत्मा जो जीवन देता है (रोमियों 7:6; 2 कुरिन्थियों 3:6)	9. शब्द जो मारता है (रोमियों 7:6; 2 कुरिन्थियों 3:6)
10. स्वतन्त्रता की सिद्ध व्यवस्था (याकूब 1:25)	10. दोषपूर्ण (इब्रानियों 8:7)

व्यवस्था केवल मनुष्य के पाप की ओर ही इशारा करती थी लेकिन इसमें पाप से उसके संघर्ष का समाधान नहीं था। एक नए मार्ग की आवश्यकता थी। नीचे दी गई बातों से पता चलता है कि जो कुछ पहली वाचा से न हो सका था, उसकी तुलना में दूसरी वाचा क्या कर सकती है: ''क्योंकि जो काम व्यवस्था शरीर के कारण दुर्बल होकर न कर सकी, उस को परमेश्वर ने किया, अर्थात अपने ही पुत्र को पापमय शरीर की समानता में, और पाप के बलिदान होने के लिए भेजकर, शरीर में पाप पर दण्ड की आज्ञा दी'' (रोमियों 8:3)।

दूसरी वाचा	पहली वाचा
1. धर्मी ठहरा सकती है (रोमियों 5:1)	1. धर्मी नहीं ठहरा सकती थी (रोमियों 3:20; गलतियों 2:16; 3:11, 12)
2. वारिस बना सकती है (रोमियों 8:17; गलतियों 4:7)	2. वारिस नहीं बना सकती थी (रोमियों 4:14)
3. धार्मिकता दिला सकती है (रोमियों 3:21, 22)	3. धार्मिकता नहीं दिला सकती थी (गलतियों 2:21)

4. आशीष दे सकती थी (इफिसियों 1:3)	4. आशीष नहीं दे सकती थी (गलतियों 3:10)
5. वारिस बना सकती है (गलतियों 3:29)	5. मीरास देने में असमर्थ थी(गलतियों3:18)
6. जीवन दे सकती है (1 यूहन्ना 5:11)	6. जीवन नहीं दे सकती थी (गलतियों3:21)
7. बचा सकती है (प्रेरितों 4:12; इब्रानियों 7:25)	7. बचा नहीं सकती थी (रोमियों 10:1)[1]
8. सिद्ध कर सकती है (इब्रानियों 10:14)	8. सिद्ध नहीं कर सकती थी (इब्रानियों7:19)
9. पाप क्षमा कर सकती है (मत्ती 26:28)	9. पाप क्षमा नहीं कर सकती थी (इब्रानियों 10:4)

अपनी व्यवस्थाओं, विधियों, और आज्ञाओं के साथ पहली वाचा वह नहीं दे सकती थी जो यीशु हमारे लिए लाया: ''क्योंकि यदि वह पहिली वाचा निर्दोष होती, तो दूसरी के लिए अवसर न ढूंढ़ा जाता'' (इब्रानियों 8:7)।

पाद टिप्पणी

[1]इसका अर्थ है, पौलुस कह रहा था कि जो लोग मसीही युग में व्यवस्था की बातें पूरी करके उद्धार पाना चाह रहे थे, वे खोए हुए थे।